2. धूप का एक टुकड़ा (निर्मल वर्मा)

डॉ. हिमांशी श्रीवास्तव
गेस्ट टीचर
मुक्त शिक्षा विद्यालय

2.1 प्रस्तावना

हिन्दी के आधुनिक कथाकारों में निर्मल वर्मा एक मूर्धन्य कथाकार और पत्रकार थे। बचपन के एकाकी क्षणों का उनका अनुभव उनके लेखन में एक सतत् तंद्रावस्था की रचना करता है। और वही उन्हें मनुष्य के मनुष्य से, व स्वयं अपने से अलगाव की प्रक्रिया पर गहन पकड़ देता है। परिंदे कहानी (1956) के प्रकाशन के बाद से नई कहानी के इस निर्विवाद प्रणेता का सबसे महत्त्वपूर्ण समय, साठ का दशक विदेश-प्रवास में बीता। इनकी सबसे बड़ी ट्रेजडी यह थी कि ना तो इन्हें विदेशियों ने अपनाया और ना ही अपने देश में इन्हें अपनापन मिला। कहानी में आधुनिकता का बोध लाने वाले कहानीकारों में निर्मल वर्मा का सर्वोच्च स्थान है। इनकी कहानियों का मुख्य विषय अकेलापन, उदासी, अवसाद, हताशा और स्वयं को पहचानने तथा स्वयं के भीतर की यात्रा है।

इस कहानी की धुरी भी अकेलापन ही है। एक स्त्री का अकेलापन जिसे वो चुन तो लेती है परंतु स्वीकारती नहीं है। उसके इस अस्वीकार की प्रकृति ही उसे एक अंतहीन तलाश की ओर धकेल देती है। एक ऐसी यात्रा जिसकी कोई मंजिल नहीं है।

2.2 अधिगम का उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप निम्नलिखित बातों से अवगत हो सकेंगे–

1. हिन्दी कथा साहित्य के क्षेत्र में लेखक के महत्त्वपूर्ण योगदान को समझ सकेंगे।
2. उनके लेखन शैली से परिचित होंगे।
3. कहानी की मूल संवेदना को समझकर आप स्वयं 'अकेलापन और उसको स्वीकार करने की अनिवार्यता।' पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर सकेंगे।
4. लेखक का समाज और स्त्री-पुरुष के संबंधों के प्रति, प्रेम, अलगाव और मृत्यु के प्रति दृष्टिकोण को समझ सकेंगे।

2.3 लेखक : जीवन-परिचय

निर्मल वर्मा का जन्म 3 अप्रैल, 1929 को शिमला में हुआ था। दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से इतिहास में एम.ए. करने के बाद कुछ दिनों तक उन्होंने अध्यापन किया। इन्हें सन् 1959-1972 तक यूरोप में प्रवास करने का अवसर मिला था और उसी समय उन्होंने लगभग समूचे यूरोप की यात्रा करके वहाँ की भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का नजदीक से परिचय प्राप्त किया था। 1959 से प्रात्र (चेकोस्लोवाकिया) के प्राच्य विद्या संस्थान में सात वर्ष तक रहे। उसके बाद लंदन में रहते हुए टाइम्स ऑफ इण्डिया के लिए सांस्कृतिक रिपोर्टिंग की।

1972 में भारत लौटे। 1977 में आयोवा विश्वविद्यालय (अमरीका) के इंटरनेशनल राइटर्स प्रोग्राम में हिस्सेदारी की। उनकी कहानी 'माया दर्पण' पर फिल्म बनी जिसे 1973 का सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ। वे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज (शिमला) के फेलो (1973), निराला सृजनपीठ भोपाल (1981-83) और यशपाल सृजनपीठ (शिमला) के अध्यक्ष रहे (1989)। 1988 में इंग्लैण्ड के प्रकाशक रीडर्स इंटरनेशनल द्वारा उनकी कहानियों का संग्रह 'द वर्ल्ड एल्सव्हेयर' प्रकाशित हुआ। इसी समय बीबीसी द्वारा उन पर डाक्यूमेंट्री फिल्म प्रसारित हुई थी। फेफड़े की बीमारी से जूझने के बाद 76 वर्ष की अवस्था में 26 अक्टूबर, 2005 को दिल्ली में उनका निधन हो गया था।

निर्मल वर्मा आधुनिक कथाकारों में एक मूर्धन्य कथाकार और पत्रकार थे। 1995 में उन्हें मूर्तिदेवी पुरस्कार, 1985 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, उत्तर प्रदेश साहित्य अकादमी पुरस्कार और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। परिंदे कहानी से प्रसिद्धि पाने वाले निर्मल वर्मा की कहानियाँ अभिव्यक्ति और शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ समझी जाती हैं।

इनके पिता श्री नंद कुमार ब्रिटिश भारत सरकार के रक्षा विभाग में एक उच्च पदाधिकारी थे। आठ भाई-बहनों में निर्मल वर्मा पाँचवें नम्बर पर थे। उनके व्यक्तित्व के संवेदनात्मक पुट पर हिमाचल की पहाड़ी छायाएँ दूर तक देखी जा सकती हैं। हिन्दी कहानी में आधुनिक-बोध लाने वाले कहानीकारों में निर्मल वर्मा का अग्रणी स्थान है। उन्होंने बहुत ज्यादा नहीं लिखा है, परंतु जितना लिखा है उतने से ही वे प्रसिद्धि पाने में सफल हुए हैं। उन्होंने कहानी की प्रचलित कला में तो संशोधन किया ही, प्रत्यक्ष यथार्थ को भेदकर उसकी भीतर पहुँचने का भी प्रयत्न किया है।

अज्ञेय और निर्मल वर्मा हिन्दी के महान साहित्यकारों में से ऐसे साहित्यकार हैं–जिन्होंने अपने प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर भारतीय और पश्चिम की संस्कृतियों के अन्तर्द्वन्द्व पर गहनता एवं व्यापकता से विचार किया है।

अपनी गंभीर, भावपूर्ण और अवसाद से भरी कहानियों के लिए निर्मल वर्मा का नाम हिन्दी साहित्य के आधुनिक हिन्दी कहानीकारों में सबसे प्रतिष्ठित नामों में गिना जाता है। उनकी लेखन शैली सबसे अलग और पूरी तरह निजी थी। गद्य की लगभग सभी विधायों में अपनी लेखनी चलाई है निर्मल वर्मा ने और हर विधा को एक नई पहचान दी है।

हिन्दी साहित्य की नई कहानी में निर्मल वर्मा को पैलियर के रूप में देखा जाता है। डॉ. नामवर सिंह उनकी कहानी 'परिंदे' को हिन्दी साहित्य की पहली नई कहानी मानते हैं। निर्मल वर्मा ही वह पहले कहानीकार थे जिन्होंने कहानियों का फोकस सामाजिक स्थितियों से मानसिक स्थितियों पर स्थानांतरित किया। उनकी कहानियों में गहरी संवेदनशीलता देखने को मिलती है। चूँकि वह शिमला के रहने वाले थे तो उनकी कहानियों में पहाड़ी का, चीड़ के पेड़ो का, बर्फ के धुंध का, जिक्र अक्सर देखने को मिलता है। उनकी कहानियों में दिल्ली का भी जिक्र देखने को मिलता है। इसके पीछे मुख्य कारण यह है कि उन्होंने अपने जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण समय दिल्ली में व्यतीत किया था, जब वे दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से इतिहास में एम.ए. कर रहे थे। और इस बात से तो हम सब वाकिफ हैं कि कोई भी व्यक्ति अपने कॉलेज दिनों में अपनी जिंदगी भरपूर जीता है। और यही बात निर्मल वर्मा पर भी लागू होती है। सन् 1959 में चेक इंस्टीट्यूट ऑफ ऑरियन्टल स्टडीज से उनको आमंत्रित किया गया चेक उपन्यासों और कहानियों के हिन्दी अनुवाद के लिए। और अगले दस साल तक वहीं रहे। एक लेखक के तौर पर उनका सर्वश्रेष्ठ समय वहीं गुजरा। यूरोप में गुजारे हुए इस लंबे वक्त का उनके लेखन शैली पर गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। और यह बहुत बड़ा कारण था कि हिन्दी साहित्य में उन्हें एक बाहरी के तौर पर जाना जाता था। उनकी कहानियों में पीड़ा, यातना, उदासी, अकेलापन, एकांत, त्रासदी, इंतजार ये सभी शब्द बिखरे पड़े हैं। उनके लिखने में एक लय है, बहाव है, एक उदासी भरी लय है। जिसको पढ़कर पाठक को एक अलग किस्म की गहराई और सुकून मिलता है। उनकी कहानियों की मुख्य धुरी है 'अपने अन्तर्मन को टटोलना' और 'अपने अन्दर उतारना'। इन्होंने अलगाव, उदासी और अकेलपन को कहानी का एक अहम् हिस्सा बना दिया। उनके कहानी के पात्र अक्सर उदासी और अकेलेपन में डूबे रहते हैं। और इसलिए उन्हें अकेलेपन का कवि कहा जाता है। उनकी कहानियों में एक और महत्त्वपूर्ण बात देखने को मिलती है कि हर व्यक्ति को किसी-न-किसी बात का दु:ख होता है। और किसी का भी दु:ख छोटा नहीं होता है। और इसलिए हम सभी को एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए। निर्मल वर्मा की कहानी के पात्रों की एक विशेषता यह भी होती है कि उनमें बहुत गहराई होती है। वे ख्यालों में डूबे रहते हैं और खामोश रहते हैं। गहरे और विचारशील एकालाप इनकी कहानियों की मुख्य विशेषता है, जिसे पढ़कर एक खास किस्म के ठहराव और संतोष का अनुभव होता है। 'खामोशी' का इतना सुंदर उपयोग हिन्दी साहित्य में कहीं और देखने को नहीं मिलता। एक और बहुत खास बात उनकी कहानियों में देखने को मिलती है कि उनके कहानी के पात्रों के नाम नहीं होते हैं। अपने लेखन शैली के माध्यम से उन्होंने बच्चों के अकेलेपन को भी दिखाया है। उनका उपन्यास

'एक चिथड़ा सुख' एक बच्चे के दृष्टिकोण को ही दर्शाता है। निर्मल वर्मा ने कहानियों को बहुत ही गंभीरता से लिखा है। उनकी कहानियों में एक खास तरह की बनावट या ढाँचा देखने को मिलता है। जो उन्हें और उनकी कहानियों को दूसरे से अलग रखता है। और यही कारण था कि निर्मल वर्मा जी पहले ऐसे साहित्यकार थे, जिन्हें उनकी कहानियों के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। ये पुरस्कार उन्हें 1985 में अपनी कहानी संग्रह 'कौवे और काला पानी' के लिए मिला। उनकी कहानियों से मुख्य रूप से यही शिक्षा मिलती है कि अकेलापन, उदासी कोई बीमारी या श्राप नहीं है, बल्कि इन मानसिक स्थितियों को स्वीकार करके जीवन में आगे बढ़ा जा सकता है और जीवन जिया जा सकता है। वे अपने पात्रों के जरिये अपने पाठकों को स्वयं को स्वीकारना, स्वयं को पहचानना और स्वयं के भीतर उतरना सिखाते हैं। जीवन का आनंद स्वयं के पास ही है। उसके लिए स्वयं से मिलना अति आवश्यक है। उनके अनुसार स्वयं को सुनना, स्वयं से बातें करना ही एक मात्र तरीका है–अपने दु:खों और उदासियों से मुक्त होने का।

निर्मल वर्मा एक संवदेनशील व्यक्तित्व के मालिक थे। मन के भावों को गहराई से समझते थे, जिन मानसिक स्थितियों के विषय में हम बात भी नहीं करना चाहते हैं, उन्हें स्वीकारने की वे हमेशा बात करते थे। उनके व्यक्तित्व की गहराई, ठहराव और गंभीरता सब कुछ उनकी रचनाओं में देखने को मिलती है।

कुल मिलाकर निर्मल वर्मा एक अद्‌भुत व्यक्तित्व के स्वामी थे जो अकेलापन उदासी और दु:ख को बहुत ही गहराई से समझते थे और समाज में इन सबके लिए एक-दूसरे के मन में सहानुभूति चाहते थे। क्योंकि अकेलापन, उदासी और दु:ख हर मनुष्य के जीवन का एक हिस्सा है, किसी के हिस्से में कम है तो किसी के हिस्से में ज़्यादा है। उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं–

उपन्यास– अंतिम अख्य, रात का रिपोर्टर, एक चिथड़ा सुख, लाल टीन की छत, वे दिन।

कहानी संग्रह– डायरी का खेल, माया का मर्म, परिंदे, कौवे और काला पानी, सूखा तथा अन्य कहानियाँ, बीच नहर में, जलती झाड़ी, पिछली गर्मियों में।

संस्मरण यात्रा वृत्तांत– धुंध से उठती धुन, चीड़ों पर चाँदनी, हर बारिश में।

नाटक– तीन एकांत।

निबंध– भारत और यूरोप, प्रतिभूति के क्षेत्र, शताब्दी के ढलते वर्षों से, कला का जोखिम, शब्द और स्मृति, ढलान से उतरते हुए, दूसरे शब्दों में, आदि, अन्त और आरम्भ सर्जना, पथ के सहयात्री, साहित्य का आत्म-सत्य।

संचयन– दूसरी दुनिया (1978, परिवर्द्धित नया संस्करण, 2005 ई.)

अनुवाद– कुप्रिन की कहानियाँ (1995)

रोमियो, जूलियट और अंचोरा (1962)

झोपड़ीवाले (1966)

बाहर और परे (1967)

बचपन (1970)

आर यू आर (1972)

कारेल चापके की कहानियाँ

इतने बड़े धब्बे

एम के : एक गाथा

संभाषण/साक्षत्कार/पत्र

दूसरे शब्दों में (1999)

प्रिय राम (मरणोपरांत 2006)

संसार में निर्मल वर्मा (मरणोपरांत 2008)

सम्मान और पुरस्कार

1999 ज्ञानपीठ पुरस्कार

2002 पद्म भूषण

1995 मूर्ति देवी पुरस्कार

1984 साहित्य अकादमी पुरस्कार

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि निर्मल वर्मा कहानी लेखन को परम्परा के बंधन से मुक्त कराने वाले और नई कहानी की नींव रखने वाले कहानीकार कहे जाते हैं। निर्मल वर्मा एक प्रगतिशील कहानीकार हैं। उनकी कहानियों का मुख्य गुण प्रतिबद्धता (Commitment) का है। इनकी कहानियों का कथ्य भी प्रतिबद्धता है और वितरण भी प्रतिबद्धता है। निर्मल वर्मा की कहानियों में मनुष्य का बाहरी परिवेश और आन्तरिक परिवेश एक-दूसरे में घुल-मिल जाते हैं। वस्तुत: निर्मल वर्मा अपने कहानियों के माध्यम से अपने पाठकों को अपने भीतर की दुनिया से अपनी बाहरी दुनिया को जोड़ना सिखाते हैं। इनकी कहानियों में बदलते समय का स्वर गूँजता है। निर्मल वर्मा को कहानी यात्रा में विशेष ख्याति मिली। नई कहानी का उद्घोष निर्मल वर्मा की कहानियों से

ही माना जाता है। इनकी कहानियों में पात्रों की बहुत भीड़ नहीं होती है। अपनी कहानियों में निर्मल वर्मा जीवन की अनुभूतियों को महत्त्व देते हैं, परम्पराओं को नहीं। बड़े ही रोचक अंदाज में निर्मल वर्मा अपनी कहानियों में आस-पास के परिवेश, प्रकृति, और बाह्य परिस्थितियों को मनुष्य के भीतरी परिवेश और लय से जोड़ देते हैं। निर्मल वर्मा अपने कथा यात्रा में सीधे सपाट रास्तों को नहीं चुनते हैं। बल्कि प्रकृति और परिवेश को दरअसल सहचर्य बना देते हैं। इनकी कहानियों में प्रकृति के विविध रूप देखने को मिलते हैं और परिवेश को जीवंत कर देते हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि निर्मल वर्मा मानव मन की गहराइयों को बाहरी परिवेश के साथ जोड़ते हुए मन के विकारों को मन की शक्ति में परिवर्तित करने में सक्षम थे।

प्रश्नों की जाँच स्वयं करना–

I. निम्न प्रश्नों का उत्तर 'हाँ' या 'ना' में दें।

क. निर्मल वर्मा ही वह पहले कहानीकार थे जिन्होंने कहानियों का फोकस सामाजिक परिस्थितियों से मानसिक स्थितियों पर स्थानांतरित किया। (.....)

ख. गहरे और विचारशील एकालाप इनकी कहानियों की मुख्य विशेषता हैं। (.....)

ग. इन्हें सन् 1959-1970 तक यूरोप में प्रवास करने का अवसर मिला था। (.....)

घ. निर्मल वर्मा पहले ऐसे साहित्यकार थे जिन्हें उनकी कहानियों के लिए साहित्य अकादमी पुरुस्कार मिला। (.....)

ङ. नई कहानी का उद्घोष निर्मल वर्मा की कहानियों से ही माना जाता है। (.....)

II. दिए गए शब्दों में रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

1. निर्मल वर्मा को ..... का कवि भी कहा जाता है। (अकेलेपन/एकांत)
2. ..... का इतना सुंदर उपयोग हिंदी साहित्य में कहीं और देखने को नहीं मिलता। (खामोशी/उदासी)
3. निर्मल वर्मा की कहानियों में पात्रों की संख्या बहुत ..... होती है। (कम/ज्यादा)
4. उनकी कहानियों की मुख्य धुरी अपने ..... की यात्रा है। (अंतर्मन/अलगाव)
5. उनकी कहानियों में पात्रों के ..... नहीं होते। (नाम/काम)

2.4 कथासार

निर्मल वर्मा द्वारा रचित 'धूप का एक टुकड़ा' कहानी एक ऐसी स्त्री की कहानी है जो स्वतंत्र होकर जीना चाहती है। लेकिन जीवन में घटनाक्रम उस स्त्री को समझौते का एहसास कराता है। स्त्री अकेलापन चुन तो लेती है लेकिन उस अकेलेपन को स्वीकार नहीं कर पाती है। इस कहानी की धूरी 'अकेलापन' ही है। एक ऐसी स्त्री का अकेलापन जो प्रेम करती है फिर विवाह करती है और फिर अलग होकर अपने आत्मसम्मान के साथ जीना चाहती है। उसके प्रेम से लेकर उसके अलगाव के बाद उसका अपने अकेलेपन को स्वीकार करने की जद्दोजहद की यात्रा है यह कहानी। 'धूप का एक टुकड़ा' यह एक लघु कहानी है और 'एकालाप' विधा में निर्मल वर्मा जी ने इसको लिखा है। एकालाप को अंग्रेजी में (monologue) कहते हैं। एक का अर्थ है जहाँ किसी व्यक्ति का लगातार बहुत देर तक आप ही बोलते रहना और दूसरों को बोलने का अवसर ना देना। जहाँ केवल एक ही व्यक्ति के कथन के माध्यम से पूरी कथा या स्थिति उद्घाटित होती है। इस एकालाप की मुख्य पात्र एक स्त्री है जिसका नाम अंत तक नहीं आता और दूसरा एक गौण पात्र है जो उस स्त्री की बातें सुनता है जिसकी अप्रत्यक्ष उपस्थिति कहानी के अंत तक बनी रहती है। तीसरा पात्र उस सुनने वाले का छोटा सा बच्चा होता है। यह कहानी फ्लैशबैक में चलती है अर्थात् वह स्त्री अपने अतीत को याद करते हुए उस अप्रत्यक्ष व्यक्ति से अपने जीवन के अनुभवों को साझा करते हुए बोलती जाती है। यह कहानी एक ऐसी स्त्री की कहानी है जो पहले प्रेम करती है फिर अपने प्रेमी से विवाह करती है और विवाह के 8 वर्ष बाद अलग हो जाती है। उसकी कोई संतान नहीं होती है। वह स्वयं स्वीकार करती है कि "मैं खुशनसीब हूँ कि मेरी कोई संतान नहीं है।" क्योंकि संतान के होने से पति-पत्नी के बीच संबंध विच्छेद होने की संभावना कम हो जाती है।

वह स्त्री अपने पति से अलग होने के बाद दूसरे शहर में जाकर रहती है और अपने अकेलेपन को स्वीकार करने के द्वंद्व में उलझी रहती है। अपने अतीत को याद करती रहती है। उसके जीवन में किस तरह प्रेम प्रस्फुटित होता है, कैसे अपने प्रेम को जीती है फिर उसका विवाह उसके प्रेमी से ही हो जाता है और विवाह के 8 वर्ष बाद वह यह अनुभव करती है कि उसके और उसके पति के बीच किसी भी तरह का कोई भावनात्मक लगाव नहीं बचा है। उनके विवाह की बुनियाद जो प्रेम था, वह तो अब कहीं था ही नहीं। उस प्रेम की जगह तो अब एक उबाऊपन, अजनबीपन और एक ठंडापन था। उसके पति के लिए उसके होने या ना होने का कोई अर्थ नहीं था। फिर वह स्त्री यह निर्णय लेती है कि वह इस दिखावे के रिश्ते से अलग होकर स्वतंत्र जीवनयापन करे। इस निर्णय के साथ ही उसका सामना समाज से और स्वयं से होता है। वह समझ जाती है कि स्वतंत्र होना एक बात है और अपनी स्वतंत्रता के साथ खुश होना दूसरी बात है। उसे कदम-कदम पर समझौते करने पड़ते हैं वह चाहकर भी अपना सच किसी को नहीं बता सकती क्योंकि हमारा समाज हर दु:ख और पीड़ा को प्रश्न चिह्न के साथ देखता है, खासकर स्त्री के दुख को। स्त्री रोज पार्क में जाती है एक बेंच पर एक ही कोने में बैठ कर

'धूप का एक टुकड़ा' को महसूस करती है वास्तव में वह उस 'प्रेम' की तलाश में है जो उसके जीवन में नहीं है। वह स्वयं की तलाश में है। अपने अधूरेपन को भरने का प्रयत्न करती है। कहानी के प्रारंभ में वह कहती है कि 'मैं रोज इसी बेंच पर बैठती हूँ'। और अंत में कहती है कि "पार्क का कोई बेंच और कोई कोना ऐसा नहीं है जहाँ वह नहीं बैठती है।" इन दोनों बातों का विरोधाभास यह स्पष्ट कर देता है कि वह स्त्री उस खुशी को, उस प्रेम को, तलाश कर रही है जो उसे संपूर्णता का अहसास कराए परंतु उसे यह खुशी अंत तक नहीं मिलती।

प्रश्नों को स्वयं जाँच करना।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक पंक्ति में दीजिए।

   क. यह कहानी किस विधा में लिखी गई है?

   ख. इस कहानी का केंद्र बिंदु क्या है?

   ग. वह स्त्री किसकी तलाश में है?

   घ. स्त्री विवाह के कितने वर्ष बाद अपने पति से अलग होती है?

   ङ. एकालाप को अंग्रेजी में क्या कहते हैं?

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

   क. वह स्त्री अपने पति से इसलिए अलग हो जाती है क्योंकि अब उनके रिश्ते में प्रेम की जगह .... (नफरत/ अजनबीपन/उबाऊपन/क्रोध) आ चुका होता है।

   ख. वह स्त्री अकेलापन चुन तो लेती है लेकिन उस ..... (स्वतंत्रता/अकेलेपन) को स्वीकार नहीं कर पाती है।

   ग. वह स्त्री उस प्रेम की तलाश कर रही है जो उसे ..... (संपूर्णता/अपनेपन) का एहसास कराए।

2.5 समीक्षा

निर्मल वर्मा की कहानियाँ उस शहरी मध्यवर्गीय व्यक्ति को अपना विषय बनाती हैं जो बहुत कुछ आत्मकेन्द्रित है। वह समाज से असम्बद्ध होने के साथ ही मानसिक रूप से असहज है। इनकी कहानियों में पाश्चात्य जीवन शैली के शहरी मध्यवर्गीय व्यक्तियों के बिगड़ते और बदलते संबंधों को उकेरा गया है। इनमें एक खास तरह का अवसाद, हताशा, पराजय बोध, अस्तित्व का संकट और उदासी के बादल छाए रहते हैं। निर्मल वर्मा की कहानियाँ अतीत की उदास स्मृतियों के सहारे अपना सफर तय करती हैं।

निर्मल जी अपनी कहानियों में आधुनिक युग की यांत्रिकता और जड़ता के फलस्वरूप टूटते परिवेश और पारिवारिक अनमनेपन के बीच व्यक्ति के अकेलेपन और अजनबीपन को बहुत ही शिद्दत एवं गंभीरता के साथ दर्शाते हैं। भीड़ के कोलाहल में कब्रिस्तानी सूनेपन का एक पूरा संसार इनकी कहानियों में नजर आता है।

'धूप का एक टुकड़ा' भीड़ में अकेलेपन की इस विडंबना का एक स्वयं के साथ संवाद है।

'धूप का एक टुकड़ा' में धूप अपने स्थान, अपने अस्तित्व एवं प्रेम का प्रतीक है जो हमें हमारे होने का एहसास कराती है। 'धूप' जीवन का भी प्रतीक है। सूरज के उगते ही, धूप के खिलते ही ये संसार जी उठता है। इस कहानी की नायिका प्रेम के तलाश में ही है एक ऐसा प्रेम जो उसके जीने का उद्देश्य हो। इसलिए ही वह धूप के टुकड़े के लिए कभी इस बेंच पर, कभी उस बेंच पर बैठती है। उसका यहाँ बैठना उस 'प्रेम' को टटोलना है; जिसके बिना उसका जीवन उदास और एकाकी है। किन्तु उसे सबसे अधिक वह बेंच पसन्द है जिसके ऊपर कोई पेड़ नहीं। वास्तव में पेड़ छाया और संरक्षण का प्रतीक है। किन्तु यहाँ पर वह एक तरह के बंधन का प्रतीक भी है। अर्थात् वह स्त्री प्रेम तो चाहती है पर बंधन नहीं; वह अपनी पहचान के साथ प्रेम चाहती है, बिना शर्तों का प्रेम चाहिए उसे जो मध्यवर्गीय समाज एक स्त्री को ऐसी इच्छा रखने की भी इजाजत नहीं देता। परिणामत: ऐसी इच्छा रखने वाली स्त्री को अकेलापन चुनना पड़ता है। दूसरी एक और कारण से उस स्त्री को वह बेंच पसन्द है क्योंकि वहाँ से वह गिरजाघर साफ दिखता है, जहाँ पंद्रह वर्ष पूर्व उसका विवाह हुआ था। और वह उस पल के एक-एक दृश्य को याद करती है। और विवाह के प्रति अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करती है क्या उस विवाह के कार्यक्रमों को हू-ब-हू दुहराया जा सकता है, उन्हीं भावनाओं के साथ? यह तो संभव ही नहीं है। क्योंकि वर्तमान जब अतीत बन जाता है, तब बहुत कुछ परिवर्तित हो चुका होता है। जैसे विवाह के समय स्त्री-पुरुष का एक-दूसरे के प्रति आकर्षण समर्पण समय के साथ अपेक्षाओं और उपेक्षाओं में घुल-मिल जाता है। विवाह में चाहे जितनी भीड़ इकट्ठी हो जाये हकीकत में उस विवाहित स्त्री को या उस पुरुष को वह भीड़ बहुत जल्दी भूल भी जाती है। उस भीड़ को, गिरजाघर या पादरी को उस स्त्री के जीवन में घटित होने वाली घटनाओं से कोई सरोकार नहीं रहता।

समाज का वास्तविक रूप समझ आने लगता है। यह सभ्य समाज जब दो लोगों, खासकर पति-पत्नी के उलझे संबंधों को सुलझाना हो तो समस्या को समझने के बजाए समस्या को परखने लगता है। और बात जब स्त्री की हो तो और भी ज्यादा। नायिका अपने एकालाप के माध्यम से यह कहती भी है कि जो दो लोग एक-दूसरे की समस्या को जितना बेहतर समझते हैं उतना ही बेहतर तरीके से उसका समाधान भी निकाल सकते हैं। परन्तु वास्तविकता इसके विपरीत होती है। वहीं दो लोग एक-दूसरे से बात करना बंद कर देते हैं और तब तीसरा व्यक्ति वह चाहे कानून का हो या समाज केवल परखने और प्रश्न चिह्न लगाने का कार्य करता है।

एक और सच का सामना निर्मल वर्मा इस कहानी में अपनी नायिका के माध्यम से करवाते हैं कि किस तरह एक स्त्री जब अपने पति से अलग होती है तो जीवन में कदम-कदम पर समझौते करती है कारण यह होता है कि हमारा समाज एक स्त्री के 'सच' को और वह भी वह 'सच' जिसका चुनाव वह स्वयं करती है, उसको स्वीकार नहीं करता। परिणामत: वह स्त्री झूठी कहानी बनाती हुई स्वयं को छुपाती हुई अपना जीवनयापन करती है। हमारा यह आधुनिक समाज स्त्री-पुरुष के समानता की बात तो अवश्य करता है, परन्तु स्वीकारता नहीं है। पुरुष अपने 'सच' को साहस के साथ स्वीकार करता है और समाज भी उसके सच को डकार लेता है किन्तु स्त्री के मामले में नहीं। स्त्री को समझौतों के साथ सामंजस्य बिठाना ही समाज को स्वीकार्य है। स्त्री अपने 'सच' को साहस के साथ स्वीकार करके समाज में सुकून, सम्मान और प्रेम की कल्पना भी नहीं कर सकती है।

नायिका जीवन के प्रति एक अजीब सी अजनबियत से ग्रसित है। जन्म, विवाह और मृत्यु के प्रति उसका नजरिया इसे स्पष्ट करता है–

"मुझे कभी-कभी यह सोचकर बड़ा आश्चर्य होता है कि जो चीजें हमें अपनी जिंदगी को पकड़ने में मदद देती हैं वे चीजें हमारी पकड़ के बाहर हैं। हम न उनके बारे में कुछ सोच सकते हैं; न किसी दूसरे को बता सकते हैं। मैं आपसे पूछती हूँ; क्या आप अपनी जन्म की घड़ी के बारे में किसी को कुछ बता सकते हैं या अपनी मौत के बारे में किसी को कुछ बता सकते हैं या विवाह के अनुभव को हू-ब-हू अपने भीतर दुहरा सकते हैं?" जीवन में यह तीनों बातें संभव नहीं हैं। कहानी की नायिका ने अकेलेपन का चुन तो लिया है, परन्तु अकेलेपन को स्वीकार नहीं किया है। इस बात को वह अपना दुर्भाग्य मानती है। और यह दुर्भाग्य हर उस आधुनिक शहरी मध्यवर्गीय व्यक्ति का है जो अकेलापन चुन तो लेता है, स्वीकार नहीं करता है। यह अस्वीकार की भावना ही व्यक्ति को और ज्यादा उद्वेलित कर देती है। उसे मानसिक रूप से अस्थिर कर देती है। इस कहानी की स्त्री पात्र की भी मानसिक स्थिति ऐसी ही है। वह अपने जीवन में किसी भी तरह का कोई खलल नहीं चाहती है लेकिन उसे प्रेम की तलाश है, एक साथ की तलाश है। वास्तव में जब हम किसी के साथ जुड़ते हैं तो हमें वह जैसा है उसको वैसे ही स्वीकार करना चाहिए है, तभी 'प्रेम' कायम रह सकता है। अपेक्षा और उपेक्षा के साथ 'प्रेम' का टिकना संभव नहीं है। बदलते समाज की यह सबसे बड़ी विडंबना है। हम सबको प्रेम चाहिए–पर अपनी शर्तों पर हम अपने प्रेमी पात्र को अपने हिसाब से काट-छाँट कर एक आकार देना चाहते हैं और इस आकार देने की प्रक्रिया में अपने हिस्से अकेलापन और उदासी के अलावा और कुछ नहीं आता।

नायिका का यह कहना–"किसी चीज का आदी न हो पाना, इससे बड़ा और कोई दुर्भाग्य नहीं। वे लोग जो आखिर तक आदी नहीं हो पाते या तो घोड़ों की तरह उदासीन हो जाते हैं; या मेरी तरह धूप के एक टुकड़े की खोज में एक बेंच से दूसरे बेंच का चक्कर लगाते रहते हैं।"

नायिका के इस एकालाप से यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी स्थिति का चुनाव करना एक विषय है और उस विषय को अपना लेना एक विषय है। जब हम किसी स्थिति को स्वीकार कर लेते हैं तो हमारा भटकाव समाप्त हो जाता है। अस्वीकृति की स्थिति में ही लोग असंतोष की भावना से भरकर भटकते रहते हैं या फिर उदासीन होकर अपने बहुमूल्य जीवन को नष्ट कर लेते हैं। भटकाव और उदासीनता यह दोनों ही किसी भी व्यक्ति और समाज के लिए घातक ही हैं।

एकालाप करती हुई स्त्री बार-बार पैरेम्बुलेटर में बच्चे को झाँकती है।

वह स्त्री अपने जीवन में अपने बच्चे की कमी महसूस करती है और कहती भी है कि मेरा कोई बच्चा नहीं है और मैं भाग्यशाली हूँ, क्योंकि हमारे समाज में कई स्त्री-पुरुष अपनी संतान के लिए एक-दूसरे के साथ बिना इच्छा के रह लेते हैं। कहीं-न-कहीं वह यह सोचती है कि उसका अगर बच्चा होता तो शायद वह अकेली ना होती। उसके जीवन में जो अधूरापन है वह नहीं होता, उसके पास जीने का और अपने दाम्पत्य जीवन को बचाये रखने का एक उद्देश्य होता। हमारे समाज में स्त्री की पूर्णता उसके मातृत्व से ही मानी जाती है। अच्छे दाम्पत्य जीवन का आधार संतान को ही माना जाता है। जबकि वास्तविकता इसके विपरीत है। इस पुरुष प्रधान समाज में स्त्री को संतान रूपी जंजीर से जकड़ना बहुत आसान होता है क्योंकि एक स्त्री जब माँ बनती है तो वह अपने बच्चे के लिए कुछ भी करने के लिए तत्पर रहती है। फिर एक अनचाहे रिश्ते को निभाना उसके लिए कोई मुश्किल कार्य नहीं है।

स्त्री का यह कहना कि "मैं भाग्यशाली हूँ कि मेरी कोई संतान नहीं है।" उसके आन्तरिक पीड़ा को दर्शाता है। विवाह के आठ वर्ष बाद भी वह माँ नहीं बन पाई, उसके दाम्पत्य जीवन के असफलता की कहानी को बयाँ करता है।

इस असफलता से उसकी मन:स्थिति कितनी असहज और अवसाद से भरी हुई है इसका अंदाजा लगाया जा सकता है।

निर्मल वर्मा की कहानियों में 'बच्चे' अक्सर आते हैं और उनकी भूमिका विशिष्ट होती है। बच्चा मानो सारी मूल्यहीनता और सारी संदिग्धता के बीच एकमात्र असंदिग्ध और मूल्यवान बचा रहता है जिसे अपनाया जा सकता है।

रमेशचन्द्र शाह के अनुसार–"लगता है जैसे इस कथाकार के लिए बच्चे की दुनिया 'एक दूसरी दुनिया' है जिसका हस्तक्षेप इस दुनिया में होते रहना इस दुनिया के स्वास्थ्य के लिए ही नहीं उसके महज टिके रहने के लिए भी जरूरी है।"

टूटे हुए दाम्पत्य जीवन के फलस्वरूप अकेले पड़ जाने और फिर स्वयं को जाँचने परखने की दस्तान निर्मल वर्मा की अन्य कहानी 'एक दिन का मेहमान' में भी है किन्तु वहाँ पुरुष के कोण से अवलोकन है और 'धूप का एक टुकड़ा' में अवलोकन का कोण स्त्री की ओर से है।

इस कहानी में दाम्पत्य जीवन में जो अलगाव दिखता है उसका कारण 'पज़ेसिवनस' का पुरुषधर्मी भाव अवश्य परिलक्षित होता है। यह 'पज़ेसिवनस' या 'अतिकामी–परिग्रही भाव' यहाँ एक समस्या की तरह दिखाई पड़ता है। बहुत कुछ वर्जिनिया वुल्फ की 'मिसेज डलीवे' की तरह जो इसलिए आजीवन कुँवारी रह जाती है क्योंकि उसे इस बात का भय रहता है कि पति उसकी चेतना पर हावी हो जाएगा और उसका निजीपन खत्म हो जायेगा। इस कहानी की नायिका भी कहती है–

"यह आपको कुछ अजीब नहीं लगता कि जब हम किसी व्यक्ति को बहुत चाहने लगते हैं तो न केवल वर्तमान में उसके साथ रहना चाहते हैं बल्कि उसके अतीत को भी निगलना चाहते हैं, जब वह हमारे साथ नहीं था।" यहाँ नायिका प्रेम के उस रूप की चर्चा कर ही है जिसको पागलपन की संज्ञा दी जा सकती है। 'प्रेम पा लेना या हासिल कर लेना नहीं है, बल्कि प्रेम किसी का हो जाना है।' जो जैसा है, उसको वैसे ही स्वीकारना प्रेम है। समर्पण और विश्वास प्रेम है। प्रेम मुक्त होना और मुक्त करना सिखाता है।

अर्थ यह कतई नहीं है कि जिसको चाहो उसकी साँसों पर भी अपना नियंत्रण रखो, उसके व्यक्तित्व को कुचल दो उसके उन पलों का भी हिसाब रखो जिसमें तुम कहीं थे ही नहीं। ऐसी भावनाओं को 'प्रेम' की संज्ञा नहीं दी जा सकती है और जब दो लोगों के बीच में खासकर पति–पत्नी के बीच में ऐसी भावनायें हों तो उनके संबंधों की मृत्यु निश्चित है। संबंध कोई भी हो उनमें एक–दूसरे के भावनाओं का सम्मान नितांत आवश्यक है और एक–दूसरे को स्पेस देना भी अनिवार्य है।

'मृत्यु' के विषय में वह स्त्री अपनी सोच को स्पष्ट करती है जो कि वास्तविकता है। वह कहती है कि हमें स्वयं को जरूर परखना चाहिए, हमें यह अवश्य जानना चाहिए कि हमारे अन्दर हमारा क्या है? हमारे अन्दर तो हमारे माता–पिता, भाई–बहन, मित्र, पति और सबको अपने–अपने हिस्से का प्रेम, सम्मान चाहिए, जिसको देने के बाद स्वयं के लिए कुछ बचता ही नहीं अर्थात् 'आत्मा' सबको प्रसन्न रखने और संतुष्ट करने में ही मर चुकी होती है। बचता है, शरीर जिसको कुछ लोग जला देते हैं। कुछ लोग दफना देते हैं। और हम कहते हैं कि मरने वाला अकेला मरता है। जबकि मरने वाला अपने अन्दर एक दुनिया लेकर मरता है जिसमें वह किसी से प्रेम करता था, किसी से नफरत करता था, किसी से लड़ता था। इसलिए हमें लगता है कि मरने वाला अपने साथ हमारा भी एक हिस्सा ले गया। और बहुत हद तक हम स्वयं के लिए दु:खी होते हैं अर्थात् मरने वाले के साथ कोई नहीं मरता, जीवन भी किसी का नहीं रुकता। बस एक खालीपन और अधुरापन रह जाता है। और हमारे दु:ख का कारण वही खालीपन या अधुरापन होता है।

इस कहानी में शहरी मध्यवर्गीय समाज जो पश्चिमी सभ्यता से बहुत प्रभावित है, का बहुत ही मार्मिक चित्रण है। शहरों की वर्तमान स्थिति यही तो है जहाँ हर आदमी अकेला है, भीड़ तो बहुत है पर उसमें भी कोई किसी के साथ नहीं है। कोई अपने दर्द बाँट नहीं सकता। हाँ, एक-दूसरे को देखकर अपने दर्द को इस कंधे से उस कंधे पर डालकर खुश होने का दिखावा कर लेता है।

हर आदमी अपने अकेलेपन से लड़ता हुआ किसी-न-किसी तलाश में भटकता रहता है और इन सबके बीच में स्वयं को खो देता है। उसके हाथ कुछ नहीं लगता। वह एक अंतहीन यात्रा पर होता है जिसकी कोई मंजिल नहीं होती। स्त्री का यह कहना कि "मैं पूरे पार्क में जहाँ-जहाँ 'धूप का एक टुकड़ा' आता है—बैठती हूँ।" इसी बात को स्पष्ट करता है कि वह उस 'प्रेम' के पीछे भाग रही है जो उसके जीवन में नहीं है, किन्तु उसको निराशा ही हाथ लगती है क्योंकि धूप एक जगह टिकती नहीं और जीवन में महत्त्व टिकने पर ही है; भागने पर तो अन्धेरा ही हिस्से में आता है। कहानी के अन्त में स्त्री जिस अप्रत्यक्ष अजनबी से संवाद कर रही है वह भी जाने लगता है। अर्थात् एक अकेली स्त्री के जीवन में उसके अकेलापन को दूर करने के लिए कोई आ भी जाये तो टिक नहीं सकता। यह हमारे समाज की एक बहुत बड़ी त्रासदी है। एक स्त्री-पुरुष के अकेलेपन को अपने सच्चे प्रेम से भरने की भरपुर कोशिश करती है। परन्तु स्त्री के सन्दर्भ में यह बहुत ही कम होता है। आज का आधुनिक समाज इतना आत्मकेन्द्रित हो चुका है कि अपने सामने किसी को भी पल-पल घुटते हुए देखकर भी अनदेखा कर देता है। समाज संवदेनहीन के साथ-साथ संवादहीन भी हो चुका है। जीवन में कुछ भी तय नहीं है—फिर भी लोग अपेक्षाओं, शर्तों और दिखावे को ही महत्त्व देते हैं। परिणामस्वरूप असंतोष, अवसाद, एकाकीपन और उदासी हमारे साथी बन जाते हैं।

'धूप का एक टुकड़ा' शैली की दृष्टि से विशिष्ट रचना है। यह कहानी एकालाप विद्या में लिखी गई है जिसमें सिर्फ दो ही पात्र हैं। एक बोलने वाली स्त्री पात्र, दूसरा सुनने वाला एक बुढ़ा व्यक्ति जिसकी उपस्थिति न के बराबर ही है।

कहानी का विन्यास नाटक की शक्ल इख्तियार कर लेता है। 'धूप का एक टुकड़ा' कहानी का दृश्य एक पब्लिक पार्क से शुरू होता है जहाँ कई बेंच हैं, पृष्ठभूमि में एक चर्च है और जहाँ-तहाँ फैले धूप के कुछ टुकड़े। एक बुढ़ा है जो एक पैरेम्बुलेटर के सामने बैठा है और उसी बेंच पर जहाँ वह स्त्री रोज बैठती है। इस प्रकार एक मौन, बुढ़े और अपने में व्यस्त पात्र की उपस्थिति इस स्त्री के अकेलेपन को और भी ज़्यादा रेखांकित करती है। एक पार्क से शुरू होकर भी कहानी का दृश्य-जगत औरत के लम्बे संवाद में उसके अतीत के प्रसंगानुसार बदलता रहता है। लेकिन उन दोनों बेंचों में किसी तरह का चेंज किये बिना ही मात्र प्रकाश द्वारा रेखांकित कुछ विशेष क्षेत्रों अथवा संगीत और अन्ततः एक स्त्री द्वारा ही कहानी की पूरी यात्रा को पकड़ने की कोशिश की गई है।

इस कहानी की भाषा सहज, सरल और मनोविश्लेषणात्मक है। निर्मल वर्मा एक शब्द-सजग, भाषा कलाधर्मी थे, भाषा की किफायतसारी के आधार पर वे प्रेमचन्द के बाद शायद दूसरे बड़े साहित्यकार हैं, आश्चर्य है कि उनसे खिन्न रहने वाले मलयज ने भी कहीं लिखा है–"शब्द निर्मल के लिए जादू हैं, वे बड़े प्यार दुलार से शब्दों को उठाते हैं और पास-पास रखते हैं, उन्हें हमेशा साफ-सुथरा रखने के लिए झाड़ते-पोंछते भी रहते हैं, शब्दों को बरतने का ढब उन्हें आता है, शब्दों को फुसलाना और फुसलाकर उनसे अपने मतलब की बात कहलवा लेना जानते हैं।" शब्दों को बहुत ही गंभीरता से लेना जानते थे, निर्मल वर्मा। उनकी लेखन की दृष्टि एक सजग भाषा-दृष्टि है, उनकी साहित्यिक सोच भी भाषा से शुरू होती है। निर्मल वर्मा के अनुसार, "इस आत्मखनन अथवा आत्म अन्वेषण का ही सबसे सक्षम आयुध भाषा है।" इस कहानी की भाषा में भी यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

कहानी का शीर्षक 'एक टुकड़ा धूप का' अपने आप में परिपूर्ण और सटीक है। 'धूप' अस्तित्व और प्रेम का प्रतीत है। जैसे धूप के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है, वैसे ही प्रेम विहीन जीवन नीरस और बोझिल हो जाता है। इस कहानी की मुख्य नायिका का जीवन भी प्रेमहीन है और वह प्रेम के तलाश में भटक रही है।

निर्मल जी विशेष रूप से अकेलापन, उदासी, अवसाद की ही कहानी लिखते थे। उनकी कहानी 'धूप का एक टुकड़ा' भी अकेलापन और टूटे हुए दाम्पत्य जीवन के बाद की संघर्ष की कहानी है। जिसमें नायिका अपने पति से अलग होकर फिर से अपने जीवन में प्रेम की अभिलाषा से प्रेम की तलाश में लगी हुई है।

निर्मल जी की इस कहानी का मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि किस तरह एक स्त्री अपने अकेलेपन से लड़ती है, उसे उन सभी कड़वी सच्चाइयों का किस तरह सामना करना पड़ता है कितने अनचाहे समझौते करने पड़ते हैं और यह यथार्थ सिर्फ स्त्री के संबंध में ही नहीं है, बल्कि हर उस व्यक्ति का सच है जो अकेला है, उदास है। वर्तमान समय में शहरी जीवन का यह एक कड़वा सच है जिसमें हर स्त्री और हर पुरुष अकेला है। जीवन मशीनी हो चुका है। सब अपने आप में कैद हैं, संवदेनहीन हो चुके हैं। किसी को किसी के आँखों में दर्द और उदासी नहीं दिखती बल्कि सब एक-दूसरे से अपेक्षा करके बैठे हैं–सामने वाला हमें प्रेम दे, समय दे।

इस कहानी का दूसरा उद्देश्य यह है कि निर्मल वर्मा यह बताना चाहते हैं अकेलापन स्वयं को जानने का, अपने भीतर यात्रा करने का एक बहुत ही सुखद अवसर है बशर्ते हम अपने अकेलेपन को स्वीकार करें और स्वयं को निखारें।

तीसरा उद्देश्य यह है कि लेखक यह भी बताना चाहता है कि प्रेम हमारे भीतर ही है और उसकी तलाश में हम भटकते हैं। हमें स्वयं को पहचानना आवश्यक है। जीवन में अस्तित्व को बनाये रखने के लिए स्थायित्व

बहुत जरूरी है, अपनी परिस्थितियों से भागना अकेलापन और उदासी का कारण है। जीवन भागने का नहीं, टिकने का नाम है। समस्या कोई भी हो उसका पहला समाधान उस समस्या को स्वीकार करना ही है।

प्रश्नों की जाँच स्वयं करना।

I. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए–

क. नायिका के चरित्र की मुख्य विशेषता बताइये।

ख. कहानी की भाषा शैली को संक्षिप्त में बताइये।

ग. कहानी में 'धूप' किसका प्रतीक है।

II. निम्नलिखित कथनों पर सही/गलत का चिन्ह लगाइये–

क. यह कहानी एक स्त्री के अकेलेपन की कहानी है। ☐

ख. लेखक की अपनी विशिष्ट शैली है। ☐

ग. स्त्री पूरे पार्क में इस बेंच से उस बेंच पर बैठती है। ☐

घ. नायिका अपने पति से अलग रहती है। ☐

ङ. नायिका अपने अतीत को भूल चुकी है। ☐

III. कोष्ठक में दिये गये शब्दों से रिक्त स्थान भरें।

क. लेखक कहानी के माध्यम से अकेलेपन को ..... करने की प्रेरणा देते हैं।

(स्वीकार/अस्वीकार)

ख. निर्मल जी विशेष रूप से .... की ही कहानी लिखते थे।

(अकेलेपन/अवसाद, प्रेम/वियोग)

ग. 'धूप का एक टुकड़ा' कहानी का ..... एक ..... से शुरू होता है।

(दृश्य/ पृष्ठभूमि) (पब्लिक पार्क / स्कूल)

घ. यह कहानी ..... विधा में लिखी गई है। (एकालाप/संवाद)

ङ. इस कहानी का केन्द्र बिंदु ..... है। (अकेलापन/अवसाद)

अंत में यह कहा जा सकता है कि 'धूप का एक टुकड़ा' कहानी एक स्त्री के अकेलेपन की कहानी है जिस अकेलेपन को उसने चुन तो लिया है पर स्वीकार नहीं कर पाई है और प्रेम की तलाश में भटकती है। किन्तु उसे अंत तक प्रेम नहीं मिलता।

लेखक के अनुसार अकेलापन स्वयं के भीतर जाने की यात्रा है। जहाँ कोई भटकाव, अवसाद और अधुरापन नहीं है। जीवन में सभी परिस्थतियों को स्वीकारना ही स्थायित्व प्रदान कर सकता है नहीं तो भटकाव और अकेलापन निश्चित है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

I. निम्न प्रश्नों का उत्तर विस्तारपूर्वक दें।

1. कहानी की समीक्षा करते हुए कहानी का कथ्य अपने शब्दों में लिखें।
2. इस कहानी के माध्यम के लेखक ने समाज को क्या संदेश दिया है?
3. एक स्त्री को अपने अकेलेपन को स्वीकार कर लेना, आप अनिवार्य मानते हैं? स्पष्ट करें।

II. निम्न अनुच्छेद की सप्रसंग व्याख्या करें।

1. "किसी भी चीज का आदी न हो पाना, इससे बड़ा और कोई दुर्भाग्य नहीं। वे लोग जो आखिर तक आदी नहीं हो पाते या तो घोड़ों की तरह उदासीन हो जाते हैं, या मेरी तरह धूप के एक टुकड़े की खोज में एक बेंच से दूसरे बेंच का चक्कर लगाते रहते हैं।"
2. "यह आपको कुछ अजीब नहीं लगता कि जब हम किसी व्यक्ति को बहुत चाहने लगते हैं तो न केवल वर्तमान में उसके साथ रहना चाहते हैं बल्कि उसके उस अतीत को भी निगलना चाहते हैं जब वह हमारे साथ नहीं था।"
3. "मुझे कभी-कभी यह सोचकर बड़ा आश्चर्य होता है कि जो चीजें हमें अपनी जिंदगी को पकड़ने में मदद देती हैं, वे चीजें हमारी पकड़ के बाहर हैं।"

सन्दर्भ-सूची

1. *'धूप का एक टुकड़ा'*–निर्मल वर्मा।
2. सिंह, नामवर कहानी *नई कहानी*, लोकभारती प्रकाशन, 2009 पृष्ठ 65।
3. *निर्मल वर्मा : धूप का एक टुकड़ा*–डॉ. गुंजन कुमार झा।
4. निर्मल वर्मा : *साहित्य का आत्म-सत्य*, पृष्ठ 35।